ASCII NAME ART

William Bricken

January 2005

```
---::----------::---::---::---------::---------::-------::---------::------::-----
---::----------::---::---::---------::---------::-----::--::------::-::--::-::----
---::----------::---::---::---------::---------::----::----::----::----::----::---
---::----------::---::---::---------::---------::---::::::::::::---::----------::---
---::----::----::---::---::---------::---------::---::------::---::----------::---
----::-::--::-::----::---::---------::---------::---::------::---::----------::---
-----::------::-----::---::::::::---::::::::---::---::------::---::----------::---
```

```
---::--------::---::---::---------::---------::-------::--------::------::----
---::--------::---::---::---------::---------::-----::--::-----::-::--::-::---
---::--------::---::---::---------::---------::----::----::----::---::---::---
---::--------::---::---::---------::---------::---::::::::::::---::--------::---
---::---::---::---::---::---------::---------::---::------::---::--------::---
----::-:::::-::----::---::---------::---------::---::------::---::--------::---
-----::----::-----::---::::::::---::::::::---::---::------::---::--------::---
```

```
---::------::---::---::---------::---------::-------::--------::----::----
---::------::---::---::---------::---------::-----::--::-----::-:::::-::---
---::------::---::---::---------::---------::----::----::----::--::--::---
---::------::---::---::---------::---------::---::::::::::::---::------::---
---::--::--::---::---::---------::---------::---::------::---::------::---
---::-:::::-::---::---::---------::---------::---::------::---::------::---
----::----::----::---::::::::---::::::::---::---::------::---::------::---
```

```
---::------::--::--::--------::--------::------::-------::----::----
---::------::--::--::--------::--------::----::--::----::-:::::-::---
---::------::--::--::--------::--------::---::----::---::--::--::---
---::------::--::--::--------::--------::--::::::::::::--::------::---
---::--::--::--::--::--------::--------::--::------::--::------::---
---::-:::::-::--::--::--------::--------::--::------::--::------::---
----::----::---::--::::::::--::::::::--::--::------::--::------::---
```

```
---::------::--::--::--------::--------::-----::------::----::----
---::------::--::--::--------::--------::----::::----::-:::::-::---
---::------::--::--::--------::--------::---::--::---::--::--::---
---::------::--::--::--------::--------::--::::::::::::--::------::---
---::--::--::--::--::--------::--------::--::----::--::------::---
---::-:::::-::--::--::--------::--------::--::----::--::------::---
----::----::---::--::::::::--::::::::--::--::----::--::------::---
```

```
---::------::--::--::------::------::----::::-----::--::----
---::------::--::--::------::------::---::--::---::::::::::---
---::------::--::--::------::------::--::----::--::-::-::---
---::--::--::--::--::------::------::--::::::::::::--::----::---
---::-:::::-::--::--::------::------::--::----::--::----::---
----::----::---::--::::::::--::::::::--::--::----::--::----::---
```

```
---::----::--::--::------::------::---::::----::--::----
---::----::--::--::------::------::--::--::--::::::::---
---::-::-::--::--::------::------::--::::::--::-::-::---
---::::::::--::--::------::------::--::--::--::----::---
----::--::---::--::::::--::::::--::--::--::--::----::---
```

```
---*----*--*--*----*----*---**----*--*----
---*----*--*--*----*----*--*--*--**--**---
---*-**-*--*--*----*----*--****- *-**-*---
---*-**-*--*--*----*----*--*--*--*----*---
----*--*---*--***--***--*--*--*--*----*---
```

```
---@---@--@--@----@----@---@@---@---@----
---@---@--@--@----@----@--@--@--@@-@@---
---@-@-@--@--@----@----@--@@@@- @-@-@---
---@@-@@--@--@----@----@--@--@--@---@---
---@---@--@--@@@--@@@--@--@--@--@---@---
```

```
---[---]--[--[----[----[---[]---[---]----
---[---]--]--]----]----]--[--]--[[-]]---
---[-|-]--[--[----[----[--[[]]- [-|-]---
---[[-]]--]--]----]----]--[--]--[---]---
---[---]--[--[|]--[|]--[--[--]--[---]---
```